

राष्ट्रीय चेतना के विकास में पत्रकारों की भूमिका अहमः डॉ ममता जोशी

अपने गौरवशाली इतिहास के प्रति हो स्वाभिमानः दीपक शर्मा



स्वाधीनता संग्राम पर आधारित मेवाड़ विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी का हुआ समापन

चित्तौड़गढ़/गंगरार (अमित कुमार चेचानी)। सभी भारतवासियों को अपने गौरवशाली इतिहास के प्रति स्वाभिमानी होने की आवश्यकता है। उक्त बातें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि रुक्त के राष्ट्रीय महामंत्री दीपक शर्मा ने कहीं। उन्होंने आगे कहा कि आखिर हम अपने सही इतिहास के प्रति सदैह में क्यों हैं। आज भारतीय समाज का मनोबल दृढ़ करने की जरूरत है। बतौर मुख्य वक्ता क्षेत्रीय संगठन मंत्री छान लाल बोरा ने कहा कि वीर

सावरकर जैसे कई परिवारों ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी कई पीढ़ियों को स्वाहा कर दिया पर इतिहास में उनका नाम कहीं दर्ज ही नहीं है।

बतौर विशिष्ट अतिथि साहित्य परिषद राजस्थान की प्रदेश संयुक्त सचिव डॉ ममता जोशी ने इस पैक्क %व्या करोगे इतिहास जानकर यह अनुवाद के अनुवाद का अनुवाद है% के साथ दुर्भावनापूर्वक लिखे गए इतिहास पर व्यंग्य करते हुए कहा कि स्वाधीनता संग्राम में सेनानियों साहित्यकारों और पत्रकारों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया परंतु अंग्रेजों के शासन काल में लिखी गई गलत इतिहास परंपरा में इनका ज़िक्र नहीं है। यह हमें नहीं भूलना चाहिए कि राष्ट्रीय चेतना के विकास में पत्रकारों की भूमिका अहम रही। उन्होंने राजस्थान के प्रमुख पत्रकारों का ज़िक्र करते हुए कहा की पथिक जनरल व्यास

हरिदेव जोशी दुर्गादास रामनारायण अखिलेश्वर प्रसाद जैसे पत्रकारों ने राजस्थान की पत्रकारिता के जरिए स्वाधीनता संग्राम में अपने कलम की धार से अंग्रेजी हुकूमत की नींद उड़ाई। उन्होंने जनजाति समाज के योगदान का भी ज़िक्र किया। संगोष्ठी में बतौर विशिष्ट अतिथि लेफिटनेंट कमांडर वर्तिका जोशी ने अपने ऐतिहासिक समुद्र यात्रा का अनुभव साझा किया। संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता प्रति कुलपति आनन्द वर्धन शुक्ल ने की। उन्होंने कहा कि स्वाधीनता संग्राम में जिन लोगों के योगदान का ज़िक्र इतिहास के पन्नों में हैं, हम उन्हें अवश्य सम्मान दें पर जिनका ज़िक्र नहीं है उन्हें न भूलें। यही सही समय है कि हम नये सिरे से लिखे जा रहे इतिहास लेखन में उनके योगदान का ज़िक्र करें।

इसके पहले प्रथम सत्र में डॉ मदन मोहन टांक, लोकेन्द्र सिंह

चुण्डावत, भारत शर्मा, डॉ सोनिया सिंगला, डॉ पंकज राठोड़, रुबी पालीवाल, मिथिलेश सोलंकी, रमन रिद्धी, डॉ साईश्वरी कौल और डॉ ममता जोशी ने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। संचालन राजेश भट्ट और डॉ योगेश व्यास ने किया। धन्यवाद ज्ञापन भारतीय इतिहास संकलन एवं रुक्त के विभाग प्रमुख डॉ पीयूष शर्मा ने किया। इस अवसर पर मेवाड़ विश्वविद्यालय के अकादमिक निदेशक ध्वजकीर्ति शर्मा, उपकुलसचिव दीसि शास्त्री, प्रो० चित्रलेखा सिंह, लक्ष्मीनारायण जोशी, घनश्याम, डॉ निखिल गर्ग, लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत सहित भारतीय संकलन समिति, राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय संघ, रुक्त के पदाधिकारीगण, मेवाड़ विश्वविद्यालय के शिक्षक व शोधार्थियों सहित विद्यार्थी उपस्थित रहें।

जयपुर, सोमवार, 26 सितम्बर 2022

अपने गौरवशाली इतिहास के प्रति हो स्वाभिमानः दीपक शर्मा राष्ट्रीय चेतना के विकास में पत्रकारों की भूमिका अहमः डॉ० ममता जोशी स्वाधीनता संग्राम पर आधारित मेवाड़ विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी का हुआ समापन

न्यूज ज्यौति

चित्तौड़गढ़/गंगारार। सभी भारतवासियों को अपने गौरवशाली इतिहास के प्रति स्वाभिमानी होने की आवश्यकता है। उक्त बातें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि रुक्ता के राष्ट्रीय महामंडी दीपक शर्मा ने कही। उन्होंने आगे कहा कि आखिर हम अपने सही इतिहास के प्रति संदेह में बत्तों हैं। आज भारतीय समाज का मनोबल दृढ़ करने की जरूरत है। बतौर मुख्य वक्ता ब्लैक्रीय संगठन मंत्री छाता लाल बोग ने कहा कि वीर सावरकर जैसे कई पत्रकारों ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी कई पीढ़ियों को स्वाहा कर दिया पर इतिहास में उनका नाम कहीं दर्ज ही नहीं है। बतौर विशिष्ट अतिथि साहित्य परिषद राजस्थान की प्रदेश संयुक्त सचिव डॉ० ममता जोशी ने इस पैक्की क्या करेंगे इतिहास जानकर यह अनुवाद के अनुवाद का अनुवाद है के साथ दुर्भावनापूर्वक लिखे गए इतिहास पर व्यंग्य करते हुए कहा कि स्वाधीनता संग्राम मैं सेनानियों साहित्यकारों और पत्रकारों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया परंतु अग्रेजों के शासन काल में



लिखी गई गलत इतिहास परंपरा में इनका जिक्र नहीं है। वह हमें नहीं भूलना चाहिए कि राष्ट्रीय चेतना के विकास में पत्रकारों की भूमिका अहम रही। उन्होंने राजस्थान के प्रमुख पत्रकारों का जिक्र करते हुए कहा की पथिक जनरल व्यास हरिंदेव जोशी दुर्गादास रामनारायण अखिलेश्वर प्रसाद जैसे पत्रकारों ने गुजरात की पत्रकारिता के जरिए स्वाधीनता संग्राम में अपने कलम की धार से अग्रेजी हुकूमत की नींद उड़ाई। उन्होंने जनजाति समाज के योगदान का भी जिक्र किया। संगोष्ठी में बतौर विशिष्ट अतिथि लेफ्टनेंट कमांडर वर्तिका जोशी ने अपने ऐतिहासिक समुद्र यात्रा का अनुभव

साझा किया। संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता प्रति कुलपति आनन्द वर्द्धन शुक्ल ने की। उन्होंने कहा कि स्वाधीनता संग्राम में जिन लोगों के योगदान का जिक्र इतिहास के पत्रों में हैं, हम उन्हें अवश्य सम्मान दें पर जिनका जिक्र नहीं है उन्हें न भूलें। यही सही समय है कि हम नये सिरे से लिखे जा रहे इतिहास लेखन में उनके योगदान का जिक्र करें। इसके पहले प्रथम सत्र में डॉ० मदन मोहन टांक, लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत, भास्त शर्मा, डॉ० सोनिया सिंगला, डॉ० पंकज राठौड़, रूबी पालीवाल, मिथिलेश सोलंकी, मन रिही, डॉ० साईक्षणी कौल और डॉ० ममता जोशी ने शोध-पत्र

प्रस्तुत किए। संचालन राजेश भट्ट और डॉ० योगेश व्यास ने किया। धन्यवाद जापन भारतीय इतिहास संकलन एवं रुक्ता के विभाग प्रमुख डॉ० पीयूष शर्मा ने किया। इस अवसर पर मेवाड़ विश्वविद्यालय के अकादमिक निदेशक ध्वजकीर्ति शर्मा, उपकुलसचिव दीपि शास्त्री, प्रो० चित्रलेखा सिंह, लक्ष्मीनारायण जोशी, घनश्याम, डॉ० निखिल गर्ग, लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत सहित भारतीय संकलन समिति, राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय संघ, रुक्ता के पदाधिकारीण, मेवाड़ विश्वविद्यालय के शिक्षक व शोधार्थियों सहित विद्यार्थी उपस्थित रहे।

मेवाड़ हलचल

स्वाधीनता संग्राम पर आधारित दो दिवसीय संगोष्ठी का समापन

राष्ट्रीय चेतना के विकास में पत्रकारों की भूमिका अहम: डॉ. जोशी

गंगारार, 25 सितम्बर (जसं.)

। सभी भारतवासियों को अपने गौरवशाली इतिहास के प्रति स्वाभिमानी होने की आवश्यकता है। अखिल हमें अपने सही इतिहास के प्रति संदेह में क्यों है, आज भारतीय समाज का मनोबल दृढ़ करने की ज़रूरत है।

यह बातें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्णिम यात्रा विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य अतिथि रुक्ता के राष्ट्रीय महामंत्री दीपक शर्मा ने कहीं। संगोष्ठी में मुख्य वक्ता क्षेत्रीय संगठन मंत्री छग्न लाल बोरा ने कहा कि वीर सावरकर जैसे कई परिवारों ने स्वतंत्रता आदेलन में अपनी कई पीढ़ियों को स्वाहा कर दिया, पर इतिहास में उनका नाम कहीं दर्ज ही नहीं है। विशिष्ट अतिथि संघित्य परिषद राजस्थान की प्रदेश संयुक्त सचिव डॉ. ममता जोशी ने इस पौक्त क्या कराए इतिहास जानकर यह



अनुबाद के अनुबाद का अनुबाद है, के साथ दुर्भावना पूर्वक लिखे गए इतिहास पर व्याय करते हुए कहा कि पर्याक्रम में सेनानियों साहित्यकारों और पत्रकारों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया। लेकिन अंग्रेजों के शासन काल में लिखी गई गलत इतिहास परंपरा में इनका जिक्र नहीं है। यह हमें नहीं भूलना चाहिए कि राष्ट्रीय चेतना के विकास में पत्रकारों की भूमिका अहम रही है।

उन्होंने राजस्थान के प्रमुख पत्रकारों का जिक्र करते हुए कहा कि पर्याक्रम के जनरल व्यास हरिदेव जोशी, दुर्गादास, रामनारायण, अखिलेश्वर प्रसाद जैसे पत्रकारों ने राजस्थान की पत्रकारिता के जरिए स्वाधीनता संग्राम में अपने कलम की धार से अंग्रेजी हुकूमत की नींद उड़ाई। उन्होंने जनजाति समाज के योगदान का भी जिक्र किया।

संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि लेफ्टिनेंट कमांडर वर्तिका जोशी ने

अपने ऐतिहासिक समुद्र यात्रा का अनुभव साझा किया। संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रति कुलपति आनन्द वर्द्धन शुक्ल ने कहा कि स्वाधीनता संग्राम में जिन लोगों के योगदान का जिक्र इतिहास के पत्रों में है, हम उन्हें अवश्य सम्मान दें पर जिनका जिक्र नहीं है उन्हें न भूलें। यहीं सही समय है कि हम नये सिरे से लिखे जा रहे इतिहास लेखन में उनके योगदान का जिक्र करें।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में डॉ. मदन मोहन टांक, लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत, भारत शर्मा, डॉ. सोनिया सिंगला, डॉ. पंकज राठोड़, रुबी पालीवाल, मिथिलेश सोलंकी, रमन रिद्दी, डॉ. साईंश्वरी कौल और डॉ. ममता जोशी ने शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी का संचालन राजेश भट्ट और डॉ. योगेश व्यास ने किया। भारतीय इतिहास संकलन एवं रुक्ता के विभाग प्रमुख डॉ. पीयूष शर्मा ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मेवाड़ विश्वविद्यालय के अकादमिक निदेशक ध्वज कीर्ति शर्मा, उप कुल सचिव दीपि शास्त्री, प्रो. चित्रलेखा सिंह, लक्ष्मीनारायण जोशी, घनश्याम, डॉ. निखिल गर्ग, लोकेन्द्र सिंह चुण्डावत सहित भारतीय संकलन समिति, राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय संघ रुक्ता के पदाधिकारी, मेवाड़ विश्वविद्यालय के शिक्षक व शोधार्थियों सहित विद्यार्थी उपस्थित रहे।

ਮੇਵਾਇ ਹਲਾਘਲ

स्वाधीनता संवाद पर आधारित दो दिवसीय संगोष्ठी का समापन

राष्ट्रीय चेतना के विकास में पत्रकारों की भूमिका अहमः डॉ. जोशी

गणपति, 25 वित्तमा (जल)।
सभी भारतीयों को अपनी
विचारकी धैर्यता के लिए
तानाक्षर होने वाली आशामुखी
देखिए, इस दृष्टि से उत्तम
विजय मिलें देखते हैं। अब भारतीय
विचारक जो भवितव्य इस दृष्टि से
देखता है,

वह बत भारी वर्षा
भूमि की सूखीय याह मिलाया है
दिवसों ताजे खाने की वापर
जैसे वे खुले लिए हुए हैं
ताजे खाने की लिंग लाल ने कही
लिंगली में खुला दाला खीरी खाया है
पांच दूसरा लाल जाने पे उत्तर दिया
वीर वर्षा करने लाले लिए हैं
साथार्थ भूमिन में अपने बड़े
खाने की लाला कर दिया
ताजिलाल में उत्तर नम की दी
ही दीर्घ है विकास अधिक वर्षा
पर्वत वर्षा करने लाला खाया है
विकास वर्षा की लाला जीती ने इस वीर
दूसरे लालाम लाला



अनुचित के अनुचित का अनुचित है, कि जब दुर्लभ वृक्ष जिन्हें एक द्रुतिकाम पर बोल लगाये हुए रहते हैं तो उनमें से अनुचित वृक्षों में द्रुतिकामी विवरणिकामी और विवरणिकी ने, अपना विवरणिकाम विवरण दिया। वृक्षों के अनुचित का अनुचित वृक्ष में द्रुतिकामी एवं द्रुतिकामी विवरणिकाम परापरा में इसका विवरण नहीं है, वह ही एक भूतन विवरण है जिसका विवरण के विवरण में विवरणों की विवरण विवरण होती है।

जल्दी राजस्वका इन्हें उत्तर करते
कि विष नहीं है बल्कि योगीक
जल्दी जल्दी जल्दी जल्दी जल्दी जल्दी
जल्दी जल्दी जल्दी जल्दी जल्दी जल्दी
जल्दी जल्दी जल्दी जल्दी जल्दी जल्दी
जल्दी जल्दी जल्दी जल्दी जल्दी जल्दी

अपने लोकोंका अमृत जल का
अवश्यक गति दिला। मानवी के
सुखावास से भी अवश्यक बने हुए
ही विद्यार्थी अपने ग्रन्थालयोंने
जल के लोकोंका धर्म देने के लिए
जलों के पौष्टक तथा विद्युतीयों
का योगदान दे रहे हैं। इस दृष्टि अवश्यक सम्बन्ध
है यह विद्याका विषय नहीं है उसके ब
भूती व्यक्ति सम्बन्ध है यह विद्यानीर्वा
नों दो विद्यार्थी जल के विद्युतीयों
में उन्हें विद्यालय का विषय नहीं

मध्यस्थी के गुप्तम सर में ही नहीं
मिलता दास, विश्वास किए गुप्तवास
भवति जन्म, ही विश्वास विश्वास
ही विश्वास कर्त्ता, जन्मी विश्वास,
विश्वास विश्वास, यज्ञ किए, ही
विश्वासी विश्वा और ही विश्वा विश्वास
न विश्वास प्रवर्त्तन किया।

प्राचीन के विवरण गतिशील और अद्वितीय हैं। इनमें सबसे बड़ा विवरण यह है कि विवरण विभिन्न विभिन्न विषयों पर आधारित है। इन विवरणों के अधीन विभिन्न विषयों पर विवरण दिए जाते हैं। यह विवरणों के अधीन विभिन्न विषयों पर विवरण दिए जाते हैं। यह विवरणों के अधीन विभिन्न विषयों पर विवरण दिए जाते हैं। यह विवरणों के अधीन विभिन्न विषयों पर विवरण दिए जाते हैं। यह विवरणों के अधीन विभिन्न विषयों पर विवरण दिए जाते हैं।